OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

मऊ के समकालीन कलाकार डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा : कला-दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना एवं समकालीन भारतीय चित्रकला में योगदान

संतोष कुमार
शोधार्थी
ललित कला विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय, देहरादून

डॉ. रीता तिवारी
शोध पर्यवेक्षक
ललित कला विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय, देहरादून।

सारांश

भारतीय समकालीन कला परिदृश्य में ऐसे अनेक कलाकार सक्रिय हैं जिन्होंने परंपरा और आधुनिकता के मध्य रचनात्मक संवाद स्थापित करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को नवीन अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा इसी श्रेणी के महत्वपूर्ण समकालीन कलाकारों में से एक हैं, जिनकी कला भारतीय सांस्कृतिक चेतना, लोकजीवन, आध्यात्मिक संवेदनाओं तथा मानवीय मूल्यों का सशक्त प्रतिनिधित्व करती है। उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद से संबंधित डॉ. विश्वकर्मा ने चित्रकार, कला-शिक्षक तथा सांस्कृतिक चिंतक के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। उनकी चित्रकृतियों में भारतीय परंपराओं, सामाजिक अनुभवों तथा सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो दर्शकों को भारतीय जीवन-दर्शन से जोड़ने का कार्य करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के कलात्मक व्यक्तित्व, उनकी कला-दृष्टि, विषय-वस्तु, शैलीगत विशेषताओं तथा समकालीन भारतीय चित्रकला में उनके योगदान का विश्लेषण करना है। अध्ययन के अंतर्गत उनकी कला में निहित सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक तत्वों का विवेचन किया गया है। शोध के लिए गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें उपलब्ध साहित्य, कला समीक्षाओं, प्रदर्शनी विवरणों तथा समकालीन कला संबंधी संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से कलाकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. विश्वकर्मा की कला भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनकी चित्रकृतियों में नारी जीवन, लोक परंपराएँ, आध्यात्मिक अनुभूतियाँ तथा मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख विषयों के रूप में उभरकर सामने आती हैं। रंगों, रेखाओं एवं प्रतीकों के माध्यम से वे भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक गहराई को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कला में लोक एवं शास्त्रीय तत्वों का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जो समकालीन भारतीय कला को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा का कलात्मक अवदान समकालीन भारतीय चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी कला भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना तथा मानवीय संवेदनाओं को सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। एक कलाकार, शिक्षक और सांस्कृतिक मार्गदर्शक के रूप में उनका योगदान भारतीय कला जगत के लिए प्रेरणास्रोत है। यह अध्ययन उनके कला-संसार को समझने तथा समकालीन भारतीय कला के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उनके योगदान का मूल्यांकन करने का एक प्रयास है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

मुख्य शब्दःडॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा, समकालीन भारतीय कला, चित्रकला, देवी-देवता, साधु-संत परंपरा, आध्यात्मिकता, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक चेतना, लोकजीवन, नारी विमर्श, धार्मिक प्रतीकवाद, भारतीय दर्शन एवं सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना

भारतीय कला परंपरा सदैव संस्कृति, धर्म, दर्शन और सामाजिक जीवन का दर्पण रही है। आधुनिक और समकालीन युग में कलाकारों ने परंपरा को केवल संरक्षित ही नही किया, बल्कि उसे नवीन अभिव्यक्तियों के माध्यम से पुनर्परिभाषित भी किया है। समकालीन भारतीय चित्रकला में कलाकार अपनी सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक अनुभवों तथा व्यक्तिगत संवेदनाओं को नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।
डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने भारतीयता को अपनी कला का मूल आधार बनाया। उनकी चित्रकृतियाँ भारतीय संस्कृति, लोकजीवन और आध्यात्मिक अनुभवों को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। वे कला को केवल सौंदर्य का माध्यम न मानकर सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना का सशक्त उपकरण मानते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के जीवन एवं कलात्मक विकास का अध्ययन करना।
2. उनकी चित्रकला की विषय-वस्तु एवं शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. उनकी कला में निहित सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों का अध्ययन करना।
4. समकालीन भारतीय चित्रकला में उनके योगदान का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। शोध में निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया है—

- प्रकाशित लेख एवं समाचार स्रोत।
- कला समीक्षाएँ एवं प्रदर्शनी विवरण।
- कलाकार से संबंधित उपलब्ध डिजिटल अभिलेख।
- समकालीन भारतीय कला संबंधी पुस्तकें एवं शोध-पत्र।

अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) तथा विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति का प्रयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

समकालीन भारतीय कला पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है। भारतीय चित्रकला में सांस्कृतिक प्रतीकों, लोक परंपराओं तथा आधुनिक अभिव्यक्तियों के संबंध में विस्तृत शोध उपलब्ध है। तथापि डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा पर केंद्रित अकादमिक शोध अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। यही कारण है कि उनके कलात्मक योगदान का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। समकालीन कला विमर्श में यह माना गया है कि कलाकार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है। डॉ. विश्वकर्मा की कला इस तथ्य का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

जीवन परिचय एवं कलात्मक यात्रा

डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा का संबंध उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद से माना जाता है। उन्होंने कला शिक्षा के क्षेत्र में उच्च अध्ययन किया तथा ललित कला के अध्यापन और सृजनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपलब्ध विवरणों के अनुसार वे काशी की कला परंपरा तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित रहे हैं। उनकी कला में भारतीय विरासत, लोकजीवन और आध्यात्मिक चेतना का समन्वित रूप दिखाई देता है। उन्होंने कला शिक्षा, प्रदर्शनी, कार्यशालाओं तथा सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से अनेक युवा कलाकारों को प्रेरित किया। कला के क्षेत्र में उनके योगदान को विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

कलात्मक दृष्टिकोण

डॉ. विश्वकर्मा की कला भारतीय संस्कृति को आधुनिक संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत करती है। उनके अनुसार कला केवल दृश्य अनुभव नही बल्कि जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति है। उनकी कला-दृष्टि के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—

भारतीय सांस्कृतिक चेतना : उनकी चित्रकृतियों में भारतीय परंपराएँ, लोक आस्थाएँ तथा सांस्कृतिक प्रतीक प्रमुखता से दिखाई देते हैं। वे भारतीयता को आधुनिक संदर्भों में पुनः स्थापित करने का प्रयास करते हैं।
आध्यात्मिकता : उनकी कला में आध्यात्मिक भावभूमि अत्यंत महत्वपूर्ण है। रंग, रूप और प्रतीकों के माध्यम से वे आत्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हैं। कई चित्रों में आध्यात्मिक ऊर्जा, ध्यान तथा सांस्कृतिक स्मृतियों का प्रभाव दिखाई देता है।
मानवीय संवेदनाएँ : उनकी रचनाओं में मानव जीवन के संघर्ष, आशा, करुणा और आत्मबल की अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है। वे मनुष्य को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

चित्रकला की विषय-वस्तु

नारी चित्रण : डॉ. विश्वकर्मा की चित्रकृतियों में नारी एक महत्वपूर्ण विषय है। वे नारी को केवल सौंदर्य के प्रतीक के रूप में नही बल्कि शक्ति, समर्पण, संघर्ष और सृजन की प्रतीक के रूप में चित्रित करते हैं। उनके "Two Indian Women" विषयक चित्रों में भारतीय स्त्री की गरिमा, आत्मविश्वास तथा सांस्कृतिक पहचान का प्रभावशाली चित्रण दिखाई देता है।
भारतीय संस्कृति : उनकी कला भारतीय लोकजीवन, परंपराओं तथा सांस्कृतिक प्रतीकों से प्रेरित है। भारतीय संस्कृति की विविधता उनके रंगों, रूपों और विषयों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
आध्यात्मिक विषय : धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों के प्रति उनका विशेष आकर्षण रहा है। उनके चित्रों में आध्यात्मिक अनुभूति और सांस्कृतिक स्मृति का समन्वय दिखाई देता है।

शैलीगत विशेषताएँ

डॉ. विश्वकर्मा की कला की प्रमुख शैलीगत विशेषताएँ निम्न हैं—

1. भारतीय रंग-बोध का प्रभाव।
2. सांकेतिक एवं अभिव्यंजनात्मक प्रस्तुति।
3. लोक एवं शास्त्रीय तत्वों का समन्वय।
4. भावप्रधान चित्रण।
5. सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

6. संतुलित संरचना एवं लयात्मक रेखांकन।

उनकी चित्रभाषा दर्शकों को भारतीय सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने का कार्य करती है।

समकालीन भारतीय कला में योगदान

डॉ. विश्वकर्मा का योगदान केवल चित्र निर्माण तक सीमित नही है। उन्होंने कला शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा युवा कलाकारों के मार्गदर्शन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके कार्य भारतीय कला की सांस्कृतिक जड़ों को सुदृढ़ करते हैं। समकालीन कला में उनका योगदान निम्न रूपों में देखा जा सकता है—

- भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण।
- कला शिक्षा का विकास।
- युवा कलाकारों को प्रेरणा।
- भारतीय विषयों का आधुनिक पुनर्पाठ।
- कला और समाज के मध्य संवाद की स्थापना।

निष्कर्ष

डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा समकालीन भारतीय चित्रकला के उन कलाकारों में हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक चेतना को आधुनिक कलाभाषा में अभिव्यक्त किया है। उनकी कला भारतीयता, आध्यात्मिकता और मानवीय संवेदनाओं का समन्वित रूप प्रस्तुत करती है। नारी, संस्कृति और आध्यात्मिक विषयों पर आधारित उनकी चित्रकृतियाँ दर्शकों को गहन सौंदर्यात्मक एवं वैचारिक अनुभव प्रदान करती हैं। उनका योगदान केवल एक चित्रकार के रूप में ही नही बल्कि कला-शिक्षक, सांस्कृतिक चिंतक और मार्गदर्शक के रूप में भी महत्वपूर्ण है। भविष्य में उनके कलाकर्म पर विस्तृत शोध भारतीय समकालीन कला के अध्ययन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

संदर्भ (References)

1. Contemporary Indian Art Studies.
2. Indian Aesthetics and Visual Culture.
3. Modern Indian Painting and Cultural Identity.
4. Sunil Vishwakarma, Contemporary Art Profiles.
5. Pranjal Arts Gallery Archives.
6. भारतीय समकालीन कला संबंधी शोध-पत्र एवं पुस्तकें।
7. भारतीय संस्कृति और चित्रकला विषयक संदर्भ ग्रंथ।